

## **The Hindu 23 March**

### **Revolutionary Ideas that live on**

**क्रांतिकारी विचार जो आज भी जिंदा है---**

- भगत सिंह की बौद्धिक विरासत नए भारत के निर्माण के लिए प्रकाश की किरण है। भगत सिंह की महान बौद्धिक विरासत की सिर्फ प्रशंसा न की जाए बल्कि उन्हें अमल में लाया जाए।
- 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी दी गई थी। भगत सिंह द्वारा बहुत कम उम्र में राष्ट्र व राष्ट्रवाद को परिभाषित किया गया तथा उनके पास शासन का वैकल्पिक का ढांचा था। जो उनके द्वारा लिखे गए लेखन कोष से परिलक्षित होता है।
- भगत सिंह द्वारा 17 वर्ष की उम्र में कलकत्ता की एक पत्रिका 'मतवाला' में लेख प्रकाशित किया गया। इसका विषय यूनिवर्सल ब्रदरहुड अर्थात् वैश्विक भाईचारा था। उन्होंने एक ऐसे सीमारहित विश्व की कल्पना की जहां हम सब एक हो और कोई भी अजनबी न हो। जब तक काले, सफेद, सभ्य-असभ्य शासक और अमीर-गरीब अछूत आदि जैसे शब्द प्रचलित रहेंगे। तब तक वैश्विक भाईचारे की भावना संभव नहीं हो सकती।
- भगत सिंह ने कहा था कि हमें समानता व न्याय के लिए अभियान चलाना चाहिए तथा इस अभियान का विरोध करने वालों को दंडित करना होगा।
- हमारे स्वतंत्रता संग्राम के नायकों में भगत सिंह संभवतः एकमात्र व्यक्ति थे जिनके पास कम उम्र में यह दृष्टिकोण था।
- भगत सिंह द्वारा सबसे अधिक विरोध अस्पृश्यता और सांप्रदायिकता का किया जो राष्ट्र की सबसे बड़ी कमजोरी थी।
- वह लाला लाजपत राय जैसे वरिष्ठ नेताओं को राजनीति पर टिप्पणी कर देते थे तथा अपने मतभेदों को व्यक्त करने हेतु बहुत स्पष्ट व निर्भिक थे। वह अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी संघर्षों और विचारधाराओं के प्रति भी सचेत थे।
- 1928 में भगत सिंह द्वारा देश की बिगड़ी स्थिति का कारण छुआछूत बताया गया और उन्होंने प्रश्न उठाया कि क्या उच्च जाति के अछूतों के संपर्क से उनकी जाति अपवित्र हो जाएगी? क्या अछूतों के प्रवेश से देवता नाराज होंगे? यदि अछूतों द्वारा कुएं का पानी इस्तेमाल किया तो क्या वह प्रदूषित होगा? यह सारे प्रश्न आज 20वीं सदी में भी प्रासंगिक हैं। क्या वर्तमान सदी में भी अस्पृश्यता जैसे मामलें शर्म की बात नहीं? भारत द्वारा अध्यात्मिक देश होने का दावा किया जाता है, फिर भी व्यक्तियों के साथ भेदभाव स्पष्ट रूप से दिखता है।
- 1920 के दशक में हिन्दु-मुस्लिम सांप्रदायिक राजनीति में वृद्धि देखी गई। हालांकि भगत सिंह द्वारा इसका विरोध किया गया था तथा समावेशी भारत के विचार की बात की।
- भगत सिंह द्वारा 1926 में नौजवान सभा की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य भेदभाव व धार्मिक अंधविश्वासों को दूर करना था।
- 1928 में भगत सिंह ने धर्म को राजनीति से अलग करने का विचार रखा। उन्होंने कहा कि यदि धर्म को राजनीति से अलग किया जाता है तो सभी संयुक्त रूप से राजनीतिक गतिविधियों की शुरुआत कर सकते हैं।

- वर्तमान स्थिति में भी राजनीति द्वारा धर्म के आधार पर राजनीति को बढ़ावा दिया जा रहा है। भगत सिंह द्वारा लाला लाजपत राय की राजनीति पर भी असहमति व्यक्त की गई। भगत सिंह द्वारा 1920 के दशक में हिन्दू महासभा और अन्य सांप्रदायिक शक्तियों के साथ लाला लाजपत राय की निकटता का उल्लेख किया और अपनी चिंता व्यक्त की।
- भगत सिंह द्वारा अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी संघर्ष के बारे में लेख लिखे। अतिवाद पर भगत सिंह द्वारा निबंध लिखा गया था जिसमें उन्होंने अपने नास्तिक होने की बात कही। उन्होंने लिखा कि हमारी प्रतिगामी सोच हमें नष्ट कर देगी। हम स्वयं को ईश्वर स्वर्ग, आत्मा जैसी विचारों में उलझे हुए हैं और हम महान विचारों पर ध्यान नहीं देते।
- वर्तमान में हमें भगत सिंह के क्रांतिकारी विचारों को याद करने की आवश्यकता है, उनके राष्ट्रवाद और बलिदान की महत्ता अधूरी है, जब तक हम उनके विचारों को नहीं अपनाते हैं। नए भारत के निर्माण के लिए यह विचार हमारे लिए एक प्रकाश की किरण की तरह है।

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

प्र- निम्न कथनों पर विचार कीजिए-

- 1- भगत सिंह ने 1928 में अपनी पार्टी नवजवान भारत सभा का हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में विलय कर दिया।
  - 2- 1920 में लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने महात्मा गांधी द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन में भाग लिया था।
  - 3- भगत सिंह ने 'अकाली' और 'कीर्ति' नामक दो अखबारों का संपादन भी किया।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

- (a) 1 और 2
- (b) 2 और 3
- (c) 1 और 3
- (d) उपर्युक्त सभी

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न उत्तर:- (D)

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न-

प्र- क्रांतिकारी संघर्ष वर्तमान विश्व में अपनी प्रासंगिकता खोता जा रहा है क्योंकि इसके स्वरूप को निजी स्वार्थपूर्ति हेतु उपयोग में लाया जा रहा है। इस कथन के संदर्भ में भगत सिंह की वैचारिक दृष्टिकोण की वर्तमान प्रासंगिकता पर प्रकाश डालें।

## कॉस्ट ऑफ लिविंग सर्वे-2019

- इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट के 2019 के विश्वव्यापी निर्वाह व्यय (कॉस्ट ऑफ लिविंग) सर्वेक्षण के अनुसार प्रथम स्थान पर पेरिस, सिंगापुर और हांगकांग दुनिया के सबसे महंगे शहरों में शामिल है। यह तीनों शहर न्यूयॉर्क से भी 7» ज्यादा महंगे है। सिंगापुर पिछले 6 वर्षों से सबसे महंगे शहरों की सूची में प्रथम स्थान पर था।
- इस सर्वे में 133 शहरों में 160 वस्तुओं की कीमत का आंकलन किया गया। स्विट्जरलैंड का ज्यूरिख चौथे स्थान पर है। स्विट्जरलैंड का ही जेनेवा और जापान का शहर ओसाका पांचवे स्थान पर है।
- दक्षिण कोरिया का सियोल, डेनमार्क का कोपेनहेगन और अमेरिका का न्यूयॉर्क संयुक्त रूप से सातवें स्थान पर है। सबसे महंगे शहरों में 10वां स्थान अमेरिका के लॉस एंजिल्स और इजरायल के तेल-अवीव का है।
- विश्व के पांच सबसे सस्ते शहरों की सूची में कराकस (वेनेजुएला), दमिश्क (सीरिया), ताशकंद (उजबेकिस्तान), अलमाटी (कजाकिस्तान) तथा बेंगलुरु (भारत) शामिल है। बेंगलुरु के अलावा भी भारत की 2 अन्य शहर चेन्नई तथा नई दिल्ली भी विश्व के 10 सबसे सस्ते शहरों में शामिल है।
- इस रिपोर्ट के अनुसार- भारत में तेजी से आर्थिक विस्तार हो रहा है, लेकिन प्रतिव्यक्ति के हिसाब से वेतन और खर्च में वृद्धि कम रहेगी। आय असमानता का कारण व्यक्तियों का वेतन कम है, जिससे परिवारों का खर्च सीमित हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप मूल्य निर्धारण के कई स्तर पैदा हो रहे हैं। इसी कारण से विभिन्न तरह के खुदरा विक्रेताओं के बीच प्रतिस्पर्धा है।

## विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट - 2019

- संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2019 के अनुसार, भारत खुशहाल देशों की सूची में पिछले साल के मुकाबले 7 स्थान नीचे गिरकर 140वें पायदान पर पहुंच गया है।
- इस सूची में 156 देशों को शामिल किया गया है। जिसमें फिनलैंड लगातार दूसरी बार शीर्ष पर है।
- आधार प्रसन्नता रिपोर्ट सामान्यतः प्रति व्यक्ति आय, जीडीपी, स्वास्थ्य, सामाजिक सहयोग, आपसी विश्वास, जीवन संबंधी निर्णय लेने की स्वतंत्रता और उदारता जैसे संकेतकों पर तैयारी की जाती है। हर साल स्थितियां विश्व स्तर पर बदल जाती हैं।

### इससे संबंधित मुख्य तथ्य

- इस रिपोर्ट में लगातार दूसरी बार फिनलैंड को शीर्ष स्थान प्राप्त हुआ है।
- फिनलैंड के बाद डेनमार्क, नॉर्वे, आइसलैंड तथा नीदरलैंड को स्थान प्राप्त हुआ है।

### भारत की रैंकिंग

- भारत की रैंकिंग में भी इस बार गिरावट हुई है, पिछले वर्ष भारत को 133वां स्थान प्राप्त हुआ था, इस वर्ष भारत को 140वां स्थान प्राप्त हुआ है।
- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि विश्वभर में उदासी, चिंता तथा गुस्से जैसी नकारात्मक भावनाओं में वृद्धि हुई है, पिछले कुछ वर्षों के मुकाबले विश्व की औसत प्रसन्नता दर में भारी कमी आई है।

### पृष्ठभूमि

- भूटान से ही प्रसन्नता को मापने की अवधारणा शुरू हुई थी, भूटान के प्रस्ताव पर सतत विकास समाधान नेटवर्क ने संयुक्त राष्ट्र संघ हेतु साल 2012 में पहली विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट जारी की थी और 20 मार्च को विश्व प्रसन्नता दिवस घोषित किया था। पहली रिपोर्ट में भारत का स्थान 111वां था और डेनमार्क पहले स्थान पर था।
- रिपोर्ट 20 मार्च को संयुक्त राष्ट्र के लिए सतत विकास समाधान नेटवर्क द्वारा जारी की गई थी, जिसे 2012 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा विश्व खुशी दिवस के रूप में नामित किया गया था।